

0345-0407 - Iohannes Chrysostomus - Quod grave sit dei clementiam contemnere

This text belongs to the [Thesaurus Linguae Graecae](#) (TLG®), a Research Center at the [University of California, Irvine](#), which digitized it and owns the relevant ©Copyright. On May 15, 2008, Prof. M. [Pantelia](#), the Director of the Center, has expressly authorized www.documentacatholicaomnia.eu to post it into our site.

Cooperatorum Veritatis Societas thanks the prof. Pantelia, the Center, and the University of California, Irvine, of having granted the opportunity to make publicly available this text of high quality, serial number '2062 355'.

Charset and format of the text have been changed in order to make it possible the computation of analytic indexes and concordances. [Analytical indexes](#) and [concordances](#) have been made by the Cooperatorum Veritatis Societas.

[00001] Quod grave sit dei clementiam contemnereᾶ

[00002] Δ'.

[00003] Τοῦ αὐτοῦ, ὅτι βαρὺ τῆς τοῦ Θεοῦ φιλανθρωπίας καταφρονεῖν.

[00004] Ἐρόεθη δὲ τῆς τῶν μυρίων ταλάντων ἀναγνωσθείσης παραβολῆς.

[00005] Καὶ κατὰ Ἰουδαίων, τοῦ σεισμοῦ γενομένου.

64.17

[00006] Ἡ μὲν τῆς Δεσποτικῆς φιλανθρωπίας ἀρτίως ἀκουομένη φιλοτιμία πολλὴν καὶ μυρίων ἀμαρτίας ταλάντων χρεοκοπίαν εἰργάσατο ἀμαρτωλοῖς δωρομένη

[00007] πολλοὶ δὲ πολλάκις τῆς Δεσποτικῆς κατασκιρτῶντες χρηστότητος, καὶ κακῶς ταῖς παρ' αὐτῆς δωρεαῖς κεχρημένοι, τὸν τῆς φιλανθρωπίας κατασκευάζουσι πλοῦτον θησαυρισμὸν ἑαυτοῖς τιμωρίας.

[00008] Οὐ γὰρ σκορπίζων ἀπλῶς τοὺς οἰκτιρομὸς ὁ Θεός, οὐδὲ νοσῶν ἀσωτίαν φιλοτιμίας, τὸν τῆς φιλανθρωπίας ἐπιδείκνυται πλοῦτον, ἀλλὰ τῆ τῶν δωρεῶν δυσωπῶν ἀφθονία·

[00009] ὅταν δὲ ἴδῃ μάτην αὐτῶ τὰ τῆς φιλανθρωπίας ῥιπτούμενα, συστέλλει τῶν ^[64.18] ἀγαθῶν τὰς πηγὰς, κατέχει τῆς φιλανθρωπίας τοὺς ὄμβρους, ὀκνεῖ χαριζόμενος.

[00010] Πόσοις ποτὲ τοὺς Ἰουδαίων δῆμους ἀγαθῶν ὑετοῖς ἐπικλύζων, ὡς εἶδεν ἀκάρπους πρὸς εὐχαριστίας καρποὺς, ὥσπερ ἐμπλησθεῖς τῆς ἐκείνων ἀγνωμοσύνης, ἐβόα·

[00011] Ἐγένεσθέ μοι εἰς πλησμονήν.

[00012] Τῆς ἐμῆς εἰς ὑμᾶς ὠφθητε, φησὶ, πρὸς με φιλανθρωπίας φιλονεικότεροι·

[00013] ἔκαμνον ὑμῖν χαριζόμενος·

[00014] Ἐγένεσθέ μοι εἰς πλησμονήν.

[00015] Εὐλόγως τῆς ἐπ' αὐτοῖς μακροθυμίας ὁ κόρος·

[00016] οὐ γὰρ εὐρίσκεται τρόπος τῆς αὐτῶν διορθώσεως ἀὰ

© 2006 Cooperatorum Veritatis Societas quoad hanc editionem iura omnia asservantur.
0345-0407 - Iohannes Chrysostomus - Quod grave sit dei clementiam contemnere
Litterarum Omnium Conspectus: 75 Litterae, quae repetitae sunt in 988 occasionibus

| | | | | | |
|---|------|----|---|------|---|
| α | 0945 | 68 | A | 0913 | 0 |
| β | 0946 | 4 | B | 0914 | 0 |
| γ | 0947 | 12 | Γ | 0915 | 0 |
| δ | 0948 | 15 | Δ | 0916 | 0 |
| ε | 0949 | 41 | E | 0917 | 1 |

| | | | | | |
|---|------|----|---|------|---|
| ζ | 0950 | 5 | Z | 0918 | 0 |
| η | 0951 | 16 | H | 0919 | 0 |
| θ | 0952 | 19 | Θ | 0920 | 2 |
| ι | 0953 | 39 | I | 0921 | 0 |
| κ | 0954 | 30 | K | 0922 | 1 |
| λ | 0955 | 32 | Λ | 0923 | 0 |
| μ | 0956 | 34 | M | 0924 | 0 |
| ν | 0957 | 69 | N | 0925 | 0 |
| ξ | 0958 | 0 | Ξ | 0926 | 0 |
| ο | 0959 | 68 | O | 0927 | 1 |
| π | 0960 | 35 | Π | 0928 | 1 |
| ρ | 0961 | 45 | P | 0929 | 0 |
| ς | 0962 | 69 | • | 0930 | 0 |
| σ | 0963 | 31 | Σ | 0931 | 0 |
| τ | 0964 | 71 | T | 0932 | 2 |
| υ | 0965 | 18 | Υ | 0933 | 0 |
| φ | 0966 | 14 | Φ | 0934 | 0 |
| χ | 0967 | 7 | X | 0935 | 0 |
| ψ | 0968 | 0 | Ψ | 0936 | 0 |
| ω | 0969 | 28 | Ω | 0937 | 0 |
| ϑ | 8164 | 1 | | | 0 |
| ϑ | 8165 | 2 | P | 8172 | |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|------|----|---|------|----|---|------|----|---|------|----|---|------|----|---|------|----|---|------|----|
| ά | 8049 | 7 | έ | 8051 | 11 | ή | 8053 | 3 | ί | 8055 | 26 | ό | 8057 | 10 | ύ | 8059 | 3 | ώ | 8061 | 1 |
| ὰ | 8048 | 9 | ὲ | 8050 | 6 | ἦ | 8082 | 1 | ἰ | 8054 | 6 | ὸ | 8056 | 5 | ὺ | 8058 | 6 | ὠ | 8060 | 0 |
| ἄ | 8118 | 1 | | | 0 | ἠ | 8134 | 17 | ἱ | 8150 | 9 | | | 0 | ῦ | 8166 | 8 | ῶ | 8182 | 12 |
| ἶ | 7936 | 10 | ἔ | 7952 | 7 | ἦ | 7968 | 0 | ἰ | 7984 | 5 | ὸ | 8000 | 1 | ὺ | 8016 | 10 | ὠ | 8032 | 0 |
| ἶ | 7937 | 3 | έ | 7953 | 1 | ή | 7969 | 0 | ί | 7985 | 0 | ό | 8001 | 2 | ύ | 8017 | 4 | ώ | 8033 | 1 |
| ἶ | 7938 | 0 | έ | 7954 | 0 | ἠ | 7970 | 0 | ἰ | 7986 | 0 | ὸ | 8002 | 0 | ὺ | 8018 | 0 | ὠ | 8034 | 0 |
| ἶ | 7939 | 0 | έ | 7955 | 0 | ἠ | 7971 | 0 | ἰ | 7987 | 0 | ὸ | 8003 | 0 | ὺ | 8019 | 0 | ὠ | 8035 | 0 |
| ἶ | 7940 | 0 | έ | 7956 | 1 | ἠ | 7972 | 0 | ἰ | 7988 | 1 | ὸ | 8004 | 1 | ὺ | 8020 | 0 | ὠ | 8036 | 1 |
| ἶ | 7941 | 0 | έ | 7957 | 0 | ἠ | 7973 | 0 | ἰ | 7989 | 0 | ὸ | 8005 | 2 | ὺ | 8021 | 0 | ὠ | 8037 | 1 |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|------|---|--|---|---|------|---|---|------|---|--|---|---|------|---|------|------|---|
| ἄ | 7942 | 0 | | 0 | ῆ | 7974 | 0 | ῖ | 7990 | 1 | | 0 | ῦ | 8022 | 0 | ῠ | 8038 | 0 |
| ἄ | 7943 | 0 | | 0 | ῆ | 7975 | 0 | ῖ | 7991 | 0 | | 0 | ῦ | 8023 | 0 | ῠ | 8039 | 0 |
| ἄ | 8064 | 0 | | 0 | ῆ | 8080 | 0 | | 0 | | | 0 | ῦ | 8167 | 0 | ῠ | 8096 | 0 |
| ἄ | 8065 | 0 | | 0 | ῆ | 8081 | 0 | | 0 | | | 0 | ῦ | 8163 | 0 | ῠ | 8097 | 0 |
| ἄ | 8066 | 0 | | 0 | ῆ | 8082 | 0 | | 0 | | | 0 | | 0 | ῠ | 8098 | 0 | 0 |
| ἄ | 8067 | 0 | | 0 | ῆ | 8083 | 0 | | 0 | | | 0 | | 0 | ῠ | 8099 | 0 | 0 |
| ἄ | 8068 | 0 | | 0 | ῆ | 8084 | 0 | | 0 | | | 0 | | 0 | ῠ | 8100 | 0 | 0 |
| ἄ | 8069 | 0 | | 0 | ῆ | 8085 | 0 | | 0 | | | 0 | | 0 | ῠ | 8101 | 0 | 0 |
| ἄ | 8070 | 0 | | 0 | ῆ | 8086 | 0 | | 0 | | | 0 | | 0 | ῠ | 8102 | 0 | 0 |
| ἄ | 8071 | 0 | | 0 | ῆ | 8087 | 0 | | 0 | | | 0 | | 0 | ῠ | 8103 | 0 | 0 |
| α | 8115 | 1 | | 0 | η | 8131 | 1 | | 0 | | | 0 | | 0 | φ | 8179 | 0 | 0 |
| α | 8116 | 0 | | 0 | ῆ | 8132 | 0 | | 0 | | | 0 | | 0 | ῠ | 8180 | 0 | 0 |
| ἄ | 8119 | 0 | | 0 | ῆ | 8135 | 1 | | 0 | | | 0 | | 0 | ῠ | 8183 | 1 | 1 |

Ceterae infrequentes vel rarissimae Litterae expositae non sunt

© 2006 Cooperatorum Veritatis Societas quoad hanc editionem iura omnia asservantur.
0345-0407 - Iohannes Chrysostomus - Quod grave sit dei clementiam contemnere
Verborum Omnium Conspectus: 122Verba, quae repetita sunt in 3,680,583 occasionibus

ἄα [00016]
ἀγαθῶν [00009] [00010]
ἀγνωμοσύνης [00010]
ἀκάρπου [00010]
ἀκουομένη [00006]
ἀλλὰ [00008]
ἀμαρτίας [00006]
ἀμαρτωλοῖς [00006]
ἀναγνωσθείσης [00004]
ἀπλῶς [00008]
ἀρτίως [00006]
ἀσωτίαν [00008]
αὐτῆς [00007]
αὐτοῖς [00015]
αὐτοῦ [00003]
αὐτῶ [00009]
αὐτῶν [00016]
ἀφθονία [00008]

βαρῦ [00003]

γὰρ [00008] [00016]
γενομένου [00005]

Δ [00002]
δε [00004] [00007] [00009]
Δεσποτικής [00006] [00007]
δήμους [00010]
διορθώσεως [00016]
δυσωπῶν [00008]
δωρεαῖς [00007]
δωρεῶν [00008]
δωρουμένη [00006]

ἐαυτοῖς [00007]
ἐβόα [00010]
Ἐγένεσθέ [00011] [00014]
εἶδεν [00010]
εἰργάσατο [00006]
εἰς [00011] [00012] [00014]
ἐκαμνον [00013]

ἐκείνων [00010]
 ἐμῆς [00012]
 ἐμπλησθεῖς [00010]
 ἐπ [00015]
 ἐπιδείκνυται [00008]
 ἐπιελεύζων [00010]
 Ἐρρέθη [00004]
 Εὐλόγως [00015]
 εὐρίσκεται [00016]
 εὐχαριστίας [00010]

Ἡ [00006]

Θεὸς [00008]
 Θεοῦ [00003]
 θησαυρισμὸν [00007]

ἴδη [00009]
 Ἰουδαίων [00005] [00010]

κακῶς [00007]
 καρπὸς [00010]
 κατασκευάζουσι [00007]
 κατασκιαζόντες [00007]
 καταφρονεῖν [00003]
 κατέχει [00009]
 κεχρημένοι [00007]
 κόρος [00015]

μακροθυμίας [00015]
 μάτην [00009]
 με [00012]
 μὲν [00006]
 μοι [00011] [00014]
 μυρίων [00004] [00006]

νοσῶν [00008]

ὁ [00008] [00015]
 οἰκτιρμούς [00008]
 ὀκνεῖ [00009]
 ὄμβρους [00009]
 ὅταν [00009]
 ὅτι [00003]
 Οὐ [00008]
 οὐ [00016]
 οὐδὲ [00008]

παρ [00007]
 παραβολῆς [00004]
 πηγὰς [00009]
 πλησμονήν [00011] [00014]
 πλοῦτον [00007] [00008]
 πολλάκις [00007]
 πολλήν [00006]
 πολλοὶ [00007]
 Πόσις [00010]
 ποτὲ [00010]
 πρὸς [00010]
 πρὸς [00012]

ῥιπτούμενα [00009]

σεισμοῦ [00005]
 σκορπιζῶν [00008]
 συστέλλει [00009]

τὰ [00009]
 ταῖς [00007]
 ταλάντων [00004] [00006]
 τὰς [00009]
 τῆ [00008]
 Τῆς [00012]
 τῆς [00003] [00004] [00006] [00007] [00007] [00008] [00009] [00009] [00010] [00015] [00016]
 τιμωρίας [00007]
 τὸν [00007] [00008]
 Τοῦ [00003]
 τοῦ [00003] [00005]
 τοὺς [00008] [00009] [00010]
 τρόπος [00016]
 τῶν [00004] [00008] [00009]

ὑετοῖς [00010]
 ὑμᾶς [00012]
 ὑμῖν [00013]

φησὶ [00012]
 φιλανθρωπίας [00003] [00006] [00007] [00008] [00009] [00009] [00012]
 φιλονεικότεροι [00012]
 φιλοτιμία [00006]
 φιλοτιμίας [00008]

χαριζόμενος [00009] [00013]
χρεοκοπίαν [00006]
χρηστότητος [00007]

ώς [00010]
ὡσπερ [00010]
ᾧφθητε [00012]